उत्पत्ति ४२

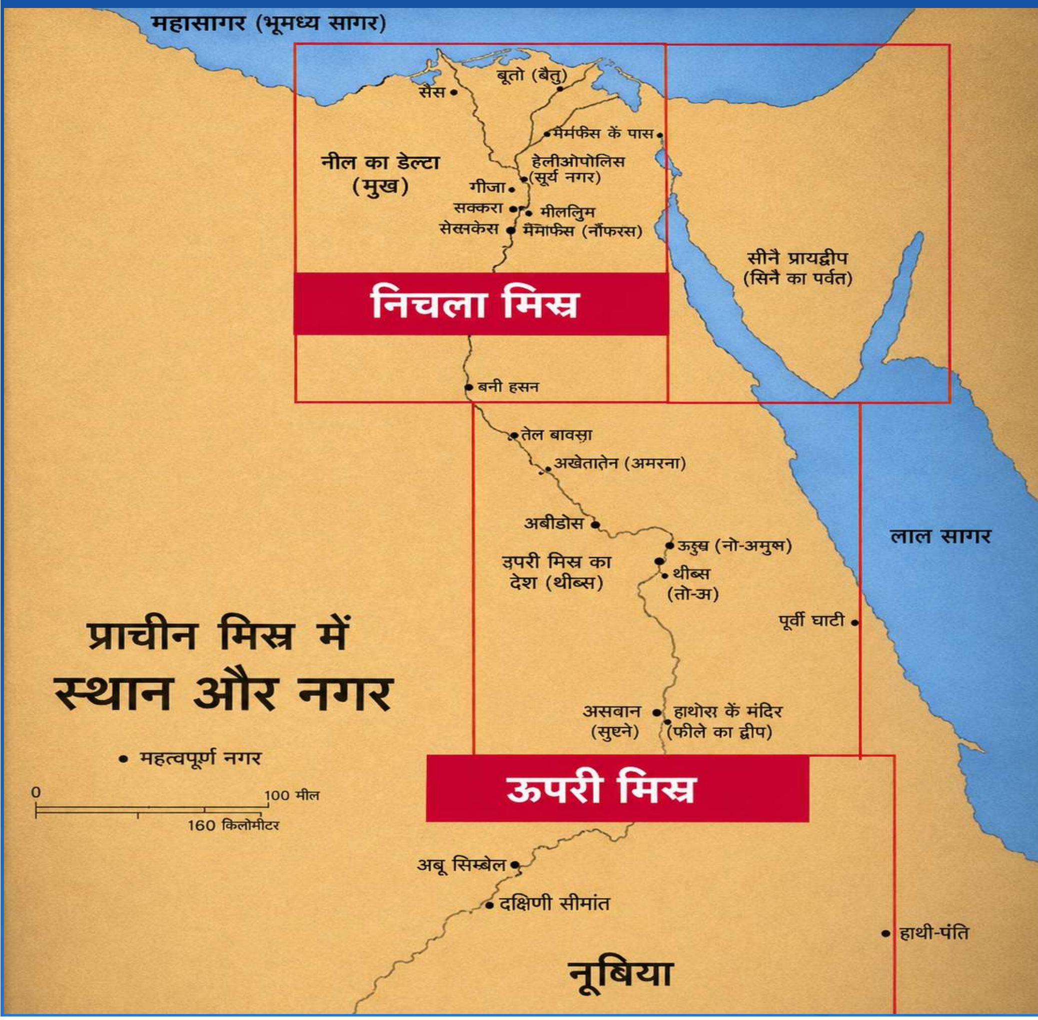

- अकाल अल्पवृष्टि के कारण उत्पन्न हुआ था
- वह मध्य पूर्व के बहुत से भागों को प्रभावित कर गया
- ऊपरी मिस्र “नीचे” कहलाता है, और निचला मिस्र “ऊपर”
- नील नदी दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है

- दो प्रमुख वर्षा-क्षेत्र नील के उद्गम पर स्थित हैं
- श्वेत नील खार्तूम में नील नील से मिलकर महान नील नदी का रूप धारण करती है
- नील डेल्टा पर समुद्र में गिरती है
- गोशेन देश डेल्टा प्रदेश में है
- दलदली भूमि चरागाह के लिये अत्युत्तम है
- मिस्र को निवासयोग्य बनाने वाली एकमात्र वस्तु नील ही है

मिस्रियों ने नहरें खोदीं

- नील का वार्षिक उतार-चढ़ाव जो भोज या अकाल निर्धारित करता था
- बाढ़ भूमि को सींचती थी और मिट्टी में पोषक तत्व लाती थी
- यूसुफ के दिनों में नील सूखी नहीं थी, केवल उसके किनारे नहीं उफनते थे
- अन्न फिर भी उगता था, पर पर्याप्त मात्रा में नहीं

कनान और मिस्र के बीच बहुत व्यापार

- कनान और ऊपरी मिस्र के मौसम-प्रकार भिन्न थे
- इस समय मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका के समस्त प्रदेश में सूखा पड़ा
- संचित अन्न दान में नहीं दिया गया, वह बेचा गया
- अत्यन्त ऊँचे भाव
- मिस्रियों ने भोजन पाने के लिये अपनी स्वतंत्रता बेच दी
- यूसुफ की मृत्यु के पश्चात् मिस्री लोग अपनी दासता के लिये यूसुफ को दोष देते
- जातियाँ अपनी विपत्तियों के लिये इस्राएल को दोष देने की रीति

याकूब अब भी कनान में है

- इस्राएल वह साधन है जिसके द्वारा परमेश्वर अपनी दिव्य योजना पूरी करेगा
- याकूब के पुत्र अन्न की समस्या हल करने के लिये कुछ नहीं कर रहे थे
- परमेश्वर ने इस्राएल को इसलिये नहीं चुना कि वे महान पुरुष थे
- हम इस्राएल के साथ खड़े हैं, इसलिये नहीं कि वे इसके योग्य हैं, परन्तु इसलिये कि यह परमेश्वर की आज्ञा है!

याकूब अपने पुत्रों को भोजन के लिये मिस्र जाने की आज्ञा देता है

- बिन्यामीन को संग जाने की अनुमति नहीं दी
- यह सामान्य ज्ञान था कि अन्न-व्यवस्था यूसुफ के हाथ में है
- भाइयों द्वारा यूसुफ के बेचे जाने के बीस वर्ष बीत चुके थे
- उन्होंने उसे पहचाना नहीं
- वह मिस्री के समान वस्त्र धारण करता और आचरण करता था
- वह लड़का होकर गया था, अब परिपक्व पुरुष बन चुका था

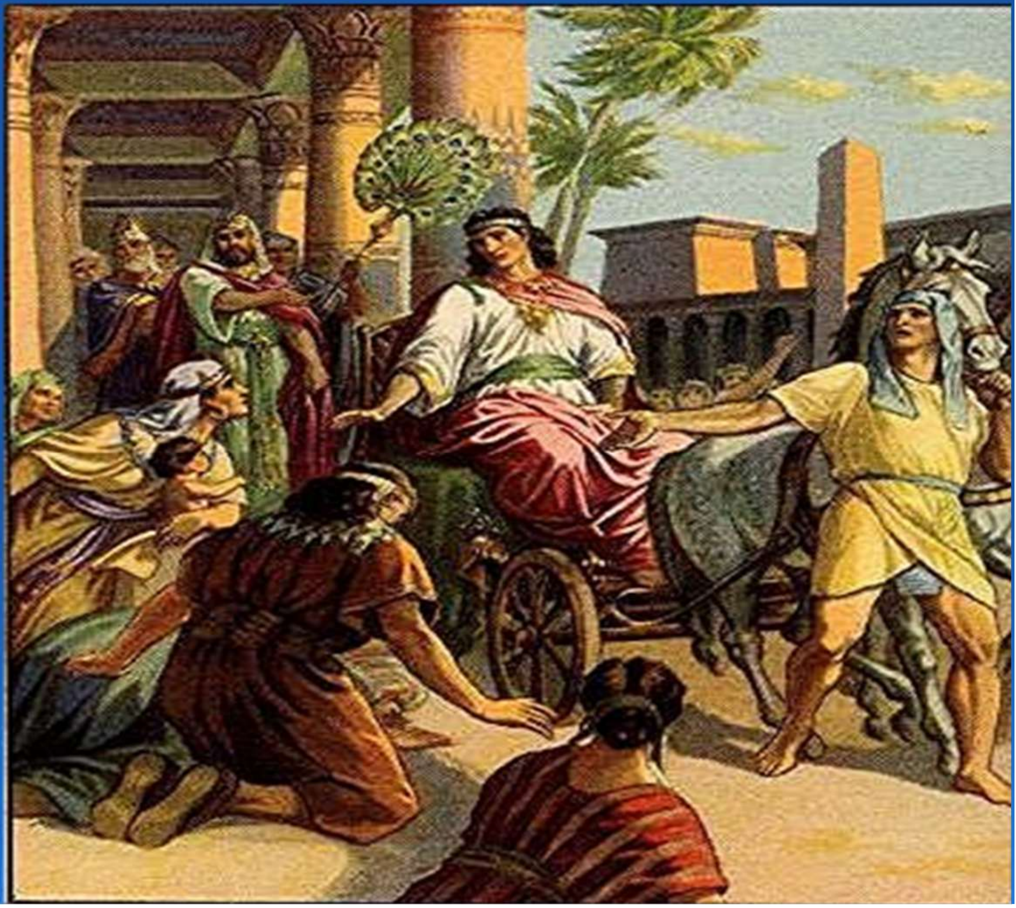

यूसुफ अब जानता है कि उसके स्वप्न सत्य थे!

- उसके भाइयों ने उसके सामने दण्डवत् की, परन्तु उन्होंने उसे पहचाना नहीं
- यूसुफ उन पर जासूस होने का आरोप लगाता है
- वे मिस्र के इस शासक के सामने निराश्रित हैं
- यूसुफ को पता चलता है कि उसका पिता याकूब और उसका भाई बिन्यामीन अब भी जीवित हैं
- भाइयों को तीन दिन के लिये बन्दीगृह में रखा जाता है, ताकि यूसुफ अनाज लेने आनेवालों से अलग उनके साथ व्यवहार कर सके

- रूबेन अपने आपको निर्दोष ठहराने का प्रयत्न करता है
- शिमोन को बन्धक रखा जाता है
- अनाज के बदले दी हुई मुद्रा उनकी अन्न की बोरियों में छिपा दी जाती है
- भाई निश्चित करते हैं कि परमेश्वर उन वर्षों पहले यूसुफ के विरुद्ध उनके विश्वासघात का बदला ले रहा है
- याकूब बिन्यामीन को जाने की अनुमति नहीं देता, जिससे शिमोन छुड़ाया जा सके

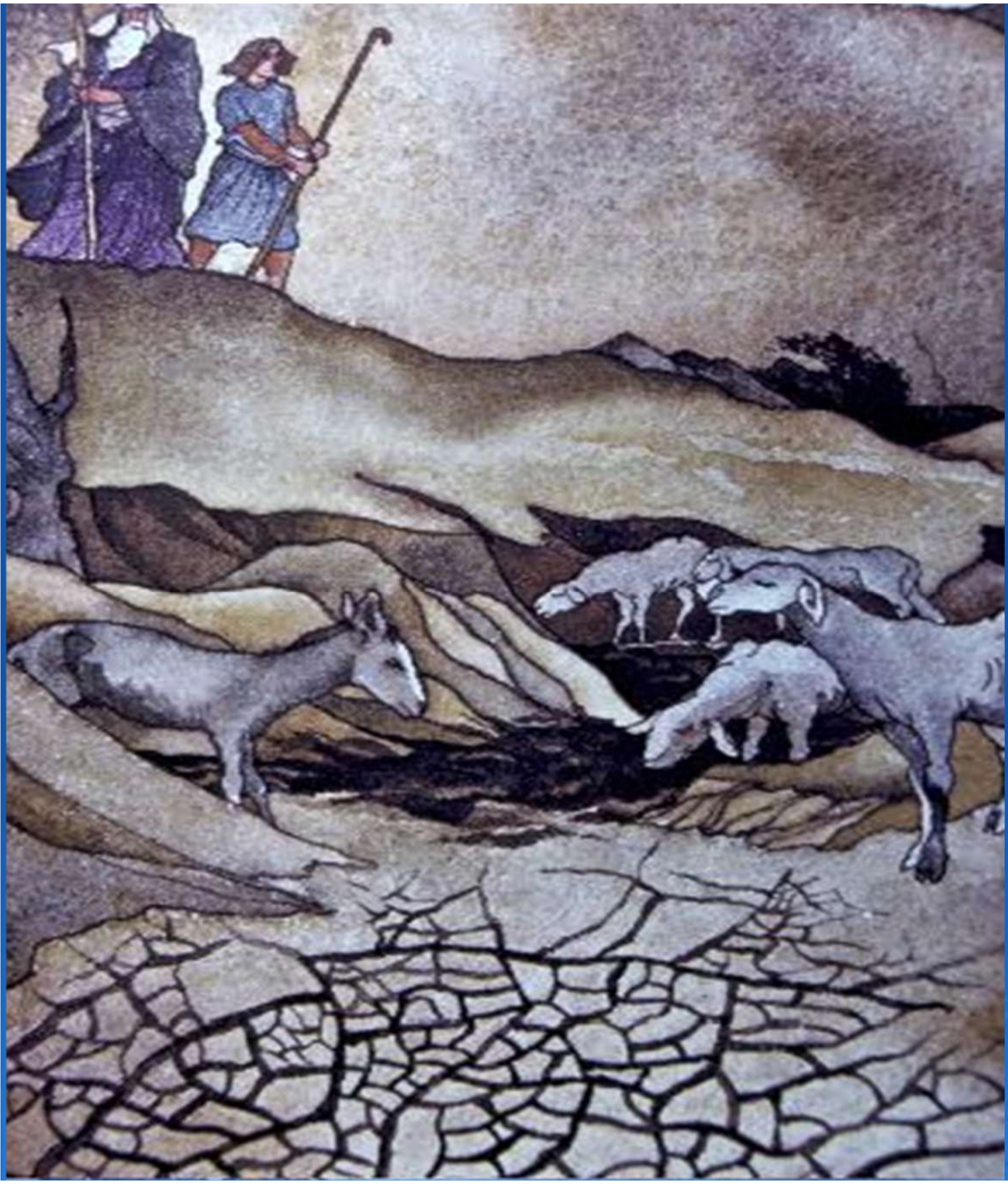

रूबेन बोल उठता है

- वह अपने दोनों पुत्रों के प्राण अर्पित करता है, यदि याकूब बिन्यामीन को मिस जाने की अनुमति दे
- रूबेन यह दिखाता है कि वह पहिलौठे के अधिकारों के योग्य क्यों नहीं था
- अकाल भयंकर था, परन्तु याकूब अनिर्ण से जड़वत हो गया था
- याकूब अब अपने पुत्रों पर विश्वास नहीं करता

उत्पत्ति ४३

- अकाल जारी रहता है
- इस्राएल और उसका कुल भोजन से वंचित हो रहा है
- यहूदा तामार के साथ अपने अनुभव से विनम्र हो जाता है
- यहूदा बिन्यामीन की सुरक्षित वापसी के लिये स्वयं को जामिन बनाकर अर्पित करता है
- यहूदा सम्भवतः स्वयं को उत्तराधिकारी समझता था
- याकूब को यहूदा पर विश्वास हो गया
- याकूब नरम पड़ता है और बिन्यामीन को जाने की अनुमति देता है

जेवनार

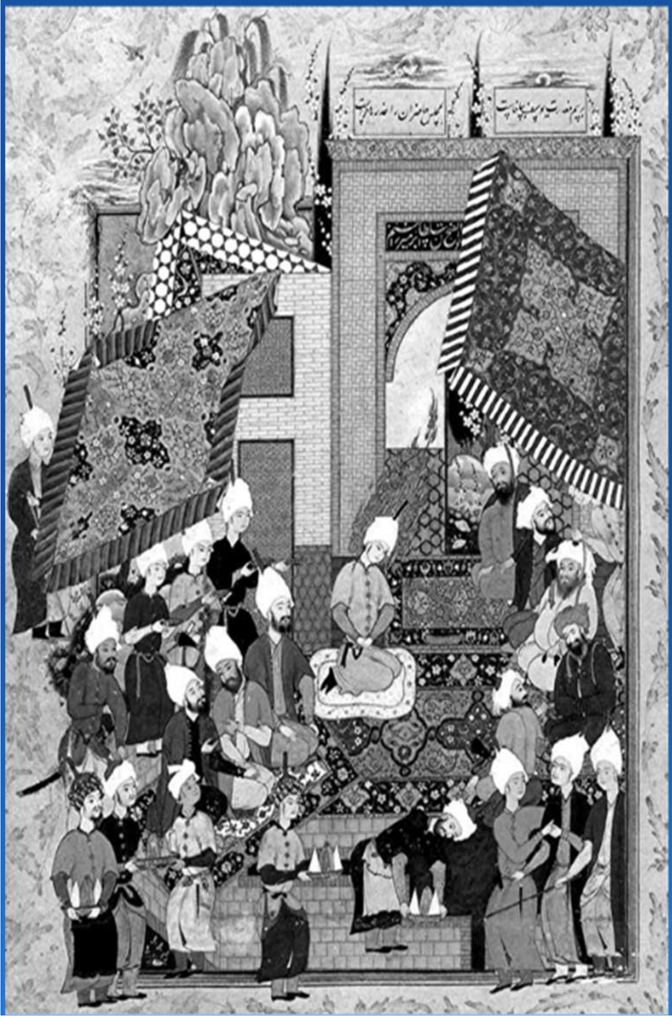

- यूसुफ अपने भाइयों को बैठाता है (१-१२वें क्रम में) उनकी आयु के अनुसार
- यह एक शाही स्वागत की रीति थी
- यूसुफ ने अकेले भोजन किया
- यहाँ तक कि सेवकों ने भी भाइयों के साथ भोजन न किया क्योंकि इब्रानियों के साथ भोजन करना मिस्रियों के लिए घृणित था
- चरवाहे नीच जाति के समझे जाते थे
- मिस्री मवेशियों को अधिक महत्व देते थे
- प्रत्येक भाई को पाँच गुणा परोसा गया
- बिन्यामीन को दूसरों की तुलना में ५ गुणा अधिक दिया गया
- बिन्यामीन को पाँच अंश मिलना इस्राएल (याकूब) की आशीष को दर्शाता है